डॉ. बाबासाहेब आंबेडक़र मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद की

पीएचड़ी. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत

।। शोध – सार ।।

शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य एक अनुशीलन

शोध – छात्र

किरण गोपाल शिंदे

शोध – निर्देशक

डॉ. हाशम बेग मिर्झा

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य

महाविद्यालय नलदुर्ग ता. तुलजपूर जि उस्मानाबाद

मार्च – २०१३

शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य एक अनुशीलन

प्रस्तावना –

समाज के यथार्थ से जुडे हुए प्रतिभासंपन्न लेखक शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व विविध मुखी है, किंतु हिंदी जगत उन्हें एक व्यंग्यकार के रूप में ही जनता है। उन्होंने सन १९७३ में हिंदी व्यंग्य साहित्य में उभरते हुए लेखक के रूप में प्रवेश किया। उनके लेखन का मूल विषय समाज होने के कारण उन्होंने अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से समाज में पनपनेवाली मूल समस्याओं को चित्रित करने का महत् प्रयास किया है।

शंकर पुणतांबेकर जी का साहित्य संसार काफी समृध्द है। वे स्वातंयोत्तर व्यंग्य के महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। पुणतांबेकरजी का प्रारंभीक व्यंग्य लेखन हल्की फुल्की रचनाओं तक सीमित था जिसमें हास्य की धार अधिक थी व्यंग्य की कम। किंतु धीरे–धीरे उन्होंने व्यंग्य की शक्ति को पहचानकर उसे विसंगतियों से लडने के लिए एक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया। उनके व्यंग्य की धार उत्तरोत्तर पैनी होती गई और हास्य का आश्रय छोडकर उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों की विसंगतियों को निर्गमता से उद्‌घाटित किया।

हिंदी व्यंग्य साहित्य में शंकर पुणतांबेकरजी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ऐसे महान व्यक्ति का जन्म २१ मई १९२५ में हुआ। शंकरजी पुणतांबेकर जी के कृतित्व के प्रभाव से उनका व्यक्तित्व और भी निखर उठता है। उनकी असामान्य बुध्दिमत्ता, गहरा अध्ययन तथा प्रतिभा शक्ति का अद्‌भूत कमाल ही उनका रचना संसार है।

शंकर पुणतांबेकर जी हिंदी के प्रखर रचनाकार है। वे जीवन के व्याख्याकार है। इनके किसी न किसी रचना पर शोधकार्य हुआ है। किंतु समग्र व्यंग्य साहित्य पर विस्तृत रूप से अध्ययन नहीं हुआ। इस दृष्टि से पुणतांबेकरजी के समग्र व्यंग्य साहित्य पर मेरे शोध ग्रंथ में विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया है।

१) शोध विषय की प्रेरणा –

किसी भी साहित्यकार का अध्ययन करने के पूर्व उसके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होना आवश्यक हो जता है। जब मै एम.ए. की कक्षा में पढता या तब मुझे ग्रंथालय में जने का अवसर मिलता था। वैसे तो मुझे व्यंग्य हमेशा आकर्षित करता रहा है। इसलिए मुझे व्यंग्य साहित्य पढने में दिलचस्पी थी। हिंदी व्यंग्य साहित्य में शताधिक व्यंग्यकार निरंतर व्यंग्य लेखन में जुटे हैं। और वे अपने आस–पास की घटनाओं के साथ ही देश–विदेश की घटनाओं पर भी व्यंग्य कलम चला रहे है। लेकिन जब मैने शंकर पुणतांबेकर का ‘कैक्टस के कॉटे’ नामक व्यंग्य संग्रह पढा तो मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। इस में पुणतांबेकर जी ने पुँजीपती, समाजवादी नेता, शोषक सरकार, प्रशासन, धोखाधडी, दिखावा नौकरपेशा, ईमानदारी, शोधकार्य आदि का व्यंग्यात्मक शैली में पर्दाफाश किया है। उनके व्यंग्य में यथार्थ का दिग्दर्शन और बुराई के प्रति घृणा होती है। इसलिए मुझे पुणतांबेकर जी के रचना संसार में बहुत ही दिलचस्पी होने लगी, और मैने तय किया की उनके व्यंग्य साहित्य को सही अर्थों में जनना होगा।

शंकर पुणतांबेकर का हिंदी व्यंग्य साहित्य में महत्त्वपुर्ण योगदान रहा है। उनकी रचनाओं को समझे बगैर व्यंग्य साहित्य की पहचान अधुरी होगी। उनके

सृजन के विविधि आयाम का अनुशीलन हो इसलिए मैंने 'शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य एक अनुशीलन', यह विषय संशोधन के लिए चयनित किया।

इस विषय के संदर्भ में मैने श्रध्देय डॉ. माधव सोनटके, डॉ. गणेशराज सोनाले, डॉ. सुभाष राठोड आदि से चर्चा करते हुए मेरे मार्गदशक के रूप में मुझे गुरू विद्या देने वाले आदरणीय गुरू डॉ. हाशमबेग मिर्झाजि से चर्चा करने के बाद इस विषय को अंतिम रूप दिया।

२) शोध विषय का उधेश –

इस अनुसंधान के माध्यम से शंकर पुणतांबेकर के समग्र व्यंग्य साहित्य की चर्चा करना यह महत्त्वपुर्ण उधेश्य है। उनके साहित्य में सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक, पारंपारिक समस्याओं को उद्घाटीत कर पाठकों को उनके विचारों से परिचित करना है।

उनकी कलम चिंतन की अपेक्षा वर्तमान समाज को गंभीर दृष्टि से चिंता के लिए प्रवृत्त करती है और उन्हें जीवन के केंद्र में रखकर विविध आयामों को तथा सामाजिक नियति और मानसिकता को स्पष्ट करना इस विषय का उधेश्य रहा है।

आज विकृतियों ने इतना भयंकर रूप धारण किया है, जिससे समाज पतन के ऐसे गर्त में चला जएगा जिसमें से निकल पाना लगभग नामुमकिन सा लगता है। इस खतरे को भॉपकर पुणतांबेकर जी ने व्यंग्य कलम चलाई है। जिससे समाज आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की और अग्रेसर हो जए। उन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से ऐसा आईना तैयार किया है जिसमें समाज अपने विद्रुप, भ्रष्ट और भयानक चेहरे को देखकर काप उठेगा। शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य केवल संवेदना के प्रति ही नहीं बल्कि उसके रूपांतरण के प्रति भी सजग है।

उनका व्यंग्य विसंगतियों के खिलाफ महज आक्रोश ही नहीं बल्कि पाठक को सोचने के लिए विवश करता है।

स्वातंयोत्तर काल की जेती–जगती विसंगतियॉ शंकर पुणतांबेकर के व्यंग्य साहित्य में उपलब्ध है। संसार की बहुत सी गन्दगी साफ करने के लिए उनका व्यंग्य सही मार्ग पर फोकस डालता है। इनके व्यंग्य के साधारण शब्द भी पाठकों की चेतना को इकझोर देते हैं। सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन की प्रत्येक विद्रुपताओं को स्पर्श कर अपनी तीक्ष्ण नजरों के कारण किसी भी दोष को पुणतांबेकर जी ने छोंडा नहीं है। उनके लेखन में आदमी ही केंद्रस्थ है। बेहतर समाज की रचना के लिए आम आदमी का विकास होना वे जरूरी मानते हैं। सच भी है कि आदमी अपने गुण दोषों को पहचानकर उनसे मुक्त होने का प्रयत्न करें तो समाज अपने आप ही शुध्द हो जएगा। समाज को आदर्श की राह पर ले जने वाला सच्चा मार्गदर्शक उनका व्यंग्य साहित्य है, जिसे स्पष्ट करना ही इस विषय का मूल उधेश्य है।

३) शोध विषय का महत्व –

साहित्य का उधेश्य आदर्श निर्माण करना है। प्रत्येक साहित्यकार समाज को आदशोन्मुख यथार्थ वाद की और ले जने के लिए साहित्य सृजन करता है। शंकर पुणतांबेकर का साहित्य इसी प्रकार का है। पुणतांबेकरजी का साहित्य संसार काफी समृध्द है। उनके निबंध, एकांकी, नाटक, उपन्यास, कथाएँ आदि विविध विधाओं की तुलना में उनका कृतित्व आधुनिकता बोध को समग्र रूप में व्यक्त करते हुए साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

अध्ययन करते समय मेरी रूचि शंकर पुणतांबेकर के साहित्य में जगृत हुई और निरंतर वृधिगत होती गई। अत: मैंने उनके व्यंग्य साहित्य पर शोधकार्य करने का निश्चित किया। शंकर पुणतांबेकर का जीवन एक संघर्षरत लेखक का जीवन है। इन्हीं अनुभुतियों का चित्रण उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देतो है। उनकी रचनाओं का मूल विषय समाज ही रहा है। उन्होंने आज के मनुष्य को उसकी समुची त्रासदी को इस उम्मीद के साथ परिमाणित करने का प्रयत्न किया है, कि बेहतर समाज की रचना हो सके।

पुणतांबेकर जी के निबंध, नाटक, उपन्यास, कथाएँ आदि में तत्कालीन समाज को व्यंग्य के सहारे व्यक्त किया है। किंतु जब वे पत्रकारिता के क्षेत्र में जीवन यापन कर रहे थे तब आपने पत्र – पत्रिकाओं में लेख लिखें, जिसमें समाज का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसे भारतीय इतिहास और समाज का दस्तावेज कहा ज सकता है।

शंकर पुणतांबेकर जी ने व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक और शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियो के विविध पहलूओं पर प्रकाश डाला है। उनकी हर रचना आकार की दृष्टि से लघु है, किंतु आशय की दृष्टि से उसमें आकाश जैसी विशालता है और सागर जैसी गहराई है। शंकर पुणतांबेकर ने समाज की हर विसंगतियों का लेखा–जेखा इस तरह प्रस्तुत किया है जैसे बिहारी के दोहे की तरह 'गागर मे सागर' जैसा प्रतित होता है। इसका अध्ययन हिंदी अनुसंधान के लिए यकीनन श्रेयस्कर होगा।

४) शोध विषय की व्याप्ति –

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए उसका नियोजन होना अनिवार्य है। इस दृष्टि से मैने ''शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य एक अनुशीलन'' इस शोध विषय को कुल आठ अध्यायों में विभाजीत किया है।

1- प्रथम अध्याय – शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2- व्दितीय अध्याय – हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा का विकास

3- तृतीय अध्याय – शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और राजनैतिक व्यवस्था

4- चतुर्थ अध्याय– शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और सामाजिक व्यवस्था

5- पंचम अध्याय– शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और शिक्षा व्यवस्था

6- षष्टम अध्याय – शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और प्रशासकीय व्यवस्था

7- सप्तम अध्याय – शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और शिल्पगत अध्ययन

8- अष्टम अध्याय – उपसंहार

प्रथम अध्याय –

''शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत शंकर पुणतांबेकर की जीवनी और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है। इस में पुणतांबेकरजी का जन्म, माता–पिता, भाई–बहन, बचपन, शिक्षा–दीक्षा, मित्र–परिवार, विवाह, नौकरी, संतान आदि के साथ–साथ पारिवारिक जेवन का परिचय दिया गया है।

शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व अपने नाम स्वरूप ही है। भगवान शंकर की तरह वे भी मोह लिप्सा, स्वप़र आदि से बिल्कुल विरक्त है। उनका जीवन विनम्रता, आत्मीयता पूर्ण संवेदनशील से भरा हुआ है। उनका व्यक्तित्व किसी भी विचारधारा से बंधा हुआ नहीं है, बल्कि जीवन में आये अनुभवों और स्थितियों से निर्मित है।

कृतित्व के अंतर्गत शंकर पुणतांबेकर के साहित्य का प्रारंभ, प्रेरणा तथा समग्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। उन्होंने व्यंग्य सृजन और व्यंग्य समीक्षा दोनों क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुणतांबेकर जी ने व्यंग्य को निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, शब्दकोश आदि सभी रूपों में सजया है। साहित्य की नई–नई विद्याओं में लेखन करने उन्होंने बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन दिये है। मनुष्य या समाज का गिरता स्तर सुधारने की पुणतांबेकरजी की तडप उनके साहित्य में देखने को मिलती है। इस अध्याय के अंत में सारांश रूप में विवेचन किया गया है।

व्दितीय अध्याय –

"हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा का विकास".

प्रस्तुत अध्याय के पूर्वाध में व्यंग्य का सैध्दांतिक विवेचन किया गया है। इसमें व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ती,भारतीय तथा पाश्चात्य विव्दानों व्दारा की गई व्यंग्य

की परिभाषाएँ, व्यंग्य के प्रकार, व्यंग्य की विशेषताएँ, हास्य और व्यंग्य में अंतर तथा हास्य व्यंग्य का संबंध आदि सोपानो व्दारा व्यंग्य की चर्चा की है। व्यंग्य को विधा मानने में लेखक समीक्षकों मे मतभिन्नता है। व्यंग्य आज की लोकप्रिय किंतु वादग्रस्त विधा है। अत: व्यंग्य को विधा के रूप में स्थापित करने का मूल आधार निरंतर व्यंग्य लेखन ही सिध्द कर रहा है।

व्यंग्य पाश्चात्य देशों के प्रभाव से विकसीत साहित्य की विधा है किंतु भारतीय साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग प्राचीन काल से देखा ज सकता है। हिंदी गदय व्यंग्य साहित्य का इतिहास सौ ढेड सौ वर्षो का रहा है। आधुनिक काल मे भारतेंदु युग में व्यंग्य का उन्मेष हुआ है। भारतेंदु युग से ही हिंदी व्यंग्य का इतिहास माना जता है। इस युग में निबंध, प्रसन्न, नाटक के माध्यम से व्यंग्य लेखन किया गया है। व्दिवेदी युग तक व्यंग्य का मंद गति से विकास हुआ। स्वातंयोत्तर काल में स्वतंत्रता के बाद उत्पन्न स्थितियों के कारण व्यंग्य लेखन के विकास क्रम में तीव्रता बढती गई। कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध कथाएँ आदि विविध रूपों में व्यंग्य सृजित हुआ। पत्र पत्रिकाओं और स्तंभ लेखन ने भी व्यंग्य के विकास में योगदान दिया है।

शुरूआती दौर में ताना या चुटकी के रूप में प्रयुक्त होने वाला व्यंग्य स्वातंयोत्तर युग में हास्य से अलग होकर गंभीर विद्या बन गया। हिंदी साहित्य में व्यंग्य स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठापित हुआ इसका सारा श्रेय हरिशंकर परसाई को जता है। हांलाकि उन्होंने व्यंग्य को विधा नहीं माना लेकिन अंतत: उन्होने स्वंयं को व्यंग्यकार माना है। परसाई जी के समकालीन व्यंग्यकार शरद जेशी, रविद्रनाथ त्यागी इन्होने भी व्यंग्य को विधा नही माना किंतु उनके व्यंग्य लेखन ने ही

व्यंग्यकारों को प्रेरणा एवं स्फुर्ति दी जिसके कारण व्यंग्य विधा के रूप में स्थापित हुआ।

इस तरह व्यंग्य विद्या के विकास में भारतेंदु युगीन व्यंग्य, व्दिवेदी युगीन व्यंग्य, रामचंद्र शुक्ल युग, प्रेमचंद तथा स्वातंयोत्तर साहित्य में व्यंग्य आदि सोपानों के आधार पर विश्लेषन किया गया है।

तृतीय अध्याय –

"शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और राजनैतिक व्यवस्था"

प्रस्तुत अध्यय में राजनीति में व्याप्त विसंगतियों के विविध पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है। राजनीति ही मनुष्य के जिवन का निर्धारण करती है। शंकर पुणतांबेकर ने सामाजिक कथ्य से अधिक राजनीतिक कथ्य को ही चूना है क्योंकि राजनीतिक परिस्थितियाँ ही पूरी व्यवस्था का नियंत्रण करती है। राजनीति में विसंगतियों का होना समुचे राष्ट के लिए हानीकार है जे राष्ट्र को पतन की और ले ज सकती है। इस दृष्टि से शंकर पुणतांबेकर ने भ्रष्ट राजनीति पर कडे प्रहार किए है।

इस अध्याय में जनतंत्र प्रणाली, नेता, चुनाव, दलबदल नारेबाजी, झुठें आश्वासन, भाषणबाजे, भ्रष्टाचार आदि विविध मुधे को लेकर राजनीतिक विसंगतियों का विश्लेषण किया गया है। इसी तरह नेताओं की स्वार्थी वृत्तिं, नेताओं का ज्ञान, नेताओं के दुर्गण, उनका कुर्सीप्रेम, जनता के प्रति उनकी सोच, कथनी करनी में अंतर कुर्सीप्रेम, जनता के प्रति उनकी सोच, कथनी करनी में अंतर आदि मुधो को लेकर नेताओं की नियत का पर्दाफार्श किया गया है।

शंकर पुणतांबेकर जी स्वतंत्रता के पूर्वकाल और स्वतंत्रता के बाद की बदलती परिस्थितीयों के प्रत्यक्षदर्शी है। इनके व्यंग्य में राजनीति पर बहुत ही स्पष्ट और सटीक टिप्पनियॉं देखने को मिलती है। पुणतांबेकर जी के राजनीतिक विसंगतियों के चित्रण में स्पष्टवादिता, प्रहारात्मकता के साथ स्वदेशी एवं प्रखर राष्ट्र प्रेम दृष्टिगोचर होता है। राजनीति का प्रभाव समाज के हर अंग पर पडता है। राजनेताओं के हाथों में ही देश का भविष्य निर्भर होता है। लेकिन सत्ता की हवस, धनलिप्सा अवसरवादिता, चुनावी हथकंडे जैसी सिध्दांत हीन राजनीति के कारण अराजकता फैली है जिससे मनुष्य एक राष्ट्र की प्रगति असंभव होती नजर आती है। इस दृष्टि से पुणतांबेकर जी का राजनीति पर किया गया व्यंग्य राजनीति की गंन्दगी साफ करने में सक्षम दिखाई देता है।

चतुर्थ अध्याय –

"शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और सामाजिक व्यवस्था"

प्रस्तुत अध्याय में समाज में पनपनेवाली हर विसंगतियो पर प्रकाश डाला गया है। साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। साहित्य समाज से जुडा. हुआ होने के कारण समाज का प्रतिबिंब साहित्य में होता है। शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य का विषय भी जीता–जगता समाज ही है, जिस में मनुष्य रहता है। भारतीय समाज अनेक जतिधर्मो और अनेक राज्यों से बना हुआ है। इसलिए यहॉं अलग–अलग रहन सहन, अलग–अलग भाषाएॅं तथा अलग–अलग विचारों के लोक रहते है। जे वक्त के साथ नहीं बदल सकी। जैसी छुआछुत, बालविवाह, दहेज, अंधश्रध्दा, नारी के भोग कि वस्तू मानना आदि। यह विकृतियॉं मानवतावादी मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति को ऱ्हास करने वाली विकृतियॉं है। इस कारण पुणतांबेकरजी ने इस पर

जबरदस्त व्यंग्य प्रहार किये है। जिसे इस अध्याय में एक एक विसंगति को लेकर स्पष्ट किया गया है।

पाश्चात्य देशों से आई हुई आधुनिकता का प्रभाव समाज पर बूरी तरह छाया हुआ है। जिस कारण परदेशी वस्तुओं का आकर्षण, रहन–सहन, अंग–प्रदर्शन, भोगवादी वृत्ति आदि विकृतियों में मनुष्य जकडा हुआ है। इस पर भी इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है। औदयोगीकरण के कारण शहरों का विकास तेजी से हुआ किंतु जीवीका की खोज में मनुष्य स्वार्थमूलक प्रवृत्ति में फसता ही ज रहा है। मनुष्य की इसी बदलती रूचियों एवं प्रवृत्तियों को तथा गुण दोषों को इस अध्याय में उजगर किया है। इस तरह से समाज में व्याप्त व्यंग्य हर विसंगतियों पर पुणतांबेकर जी ने इस ढंग से व्यंग्य कलम चलाई है कि व्यक्ति में इन विकृतियों को दूर करने की सोच पैदा होती है।

पंचम अध्याय –

"शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और शिक्षा व्यवस्था"

प्रस्तुत अध्याय में शिक्षा क्षेत्र की विसंगतियों का पर्दाफाश किया है। शिक्षा, व्यक्ति समाज और राष्ट्र की प्रथम अनिवार्यता है साथ ही उसकी शक्ति का केंद्र भी। शिक्षित नागरिकों व्दारा ही सुयोग्य राष्ट्र की निर्मिती होती है। इसलिए राष्ट्र को सुयोग्य, शिक्षित बनाना ही शिक्षा का व्यापक उधेश्य होता है। किंतु स्वाधीन भारत के राष्ट्र निर्माताओं ने शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया। परिणाम स्वरूप शिक्षा क्षेत्र भी अधपतन, अव्यवस्था, अनैतिकता और अराजकता आदि दुर्गुनों से अछुता नहीं रहा। इसी कारण पुणतांबेकर जी ने शिक्षा क्षेत्र की अव्यवस्था पर कडे व्यंग्य प्रहार किये है जिसे इस अध्याय में प्रस्तुत किया है।

भारतीय शिक्षा पध्दति की हजरो वर्षो की परंपरा है। प्राचीन काल की गुरूकुल पध्दति में छात्रों को संस्कारित एवं विव्दान बनाने की शिक्षा दी जती थी किंतू वर्तमान समय में शिक्षा का स्तर गीर गया है छात्रों को विव्दान एवं संस्कारित बनाने की बजए उन्हें धनवान बनाया जने लगा है। उन्हें जीवन मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जती। शिक्षा संस्थाओं का निर्माण राजनेता लोक ही करने लगे हैं जे कि ज्यादातर अनपढ, चरित्रहीन व्यक्तित्व के लोग होते है। इस कारण शिक्षा के स्तर में गिरावट आई है। विदयार्थीयों के प्रवेश से लेकर अध्यापकों की नियुक्तियों तक पैसों का ही बोलबाला चलने लगा है। परिणाम स्वरूप शिक्षा का बाजरीकरण हो गया है।

पुणतांबेकर जी ने लगभग चालीस वर्ष तक शिक्षा सेवा में योगदान दिया है। इस कारण शिक्षा क्षेत्र की विसंगतियों को वे भलिभॉंति जनते हैं बल्कि अनुभव भी किया है। शिक्षा साम्राज्य, मैनेजिंग बोर्ड, नियुक्तियॉं अध्यापकों की कार्यनिष्ठा, छात्रों की अध्ययन के प्रतिरूचि, शोध छात्र, शोधनिर्देशक, शोध कार्य का स्तर आदि अनेक मुदद्दोपर पुणतांबेकर जी ने अपने व्यंग्य लेखन व्दारा उजगर किया है। जिसे इस अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

षष्टम अध्याय –

‘‘शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य और प्रशासकिय व्यवस्था’

प्रस्तुत अध्याय में प्रशासकिय व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों पर विश्लेषन किया गया है। सरकारी अधिकारीयों की कार्य प्रवृत्ति, भ्रष्ट नौकर, अस्पताल का तंत्र, रेल, नगर निगम, पुलिस, लोकनिर्माण आदि हर तरह स्वार्थ लोलुपता,

भ्रष्टाचार दिखाई देता है। जिस पर पुणतांबेकरजी अपने व्यंग्य साहित्य में कडे प्रहार किए है जिसे इस अध्याय में स्पष्ट किया है।

पुणतांबेकर जी ने प्रशासन में व्याप्त भाई–भतिजवाद, रिश्वतखोरी, अफसरों की कार्य के प्रति उदासिनता आदि बाते समाज के लिए घातक एचं पतन की और ले जनी वाली है। इस और संकेत किया है। समाज को अधपतन से रोकना ही उनका प्रमुख उधेश्य है। प्रशासन की सुनियोजित कार्यपध्दति पर ही समाज का स्तर निर्भर रहता है। इस दृष्टि से उन्होंने प्रशासकीय व्यवस्था की खबर ली है। जिसे इस अध्याय में अनेक मुधो के व्दारा उजगर किया है।

सप्तम अध्याय –

"शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य का शिल्पगत अध्ययन"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत पूणतांबेकर जी के व्यंग्य साहित्य की शब्दावली, भाषा का अध्ययन तथा तत्सम, तद्भव, देशी विदेशी शब्द, अलंकार, योजना मुहावरे, भाषाशैली आदि का विस्तृत रूप से अध्ययन किया कया है।

इस अध्याय में शैली से तात्पर्य तथा शैली की भारतीय तथा पाश्चात्य विव्दानों व्दारा की गई परिभाषाओं को प्रस्तूत किया है। भाषा और शैली का संबंध मुहावरे एवं कहावते, प्रतिक एवं मिथक योजना तथा विविध शैलीयों का प्रयोग आदि व्दारा पुणतांबेकर जी के व्यंग्य साहित्य पर प्रकाश डाला गया है।

व्यंग्य की मूल शक्ति कथ्य में निहित होती है। पुणतांबेकर जी ने व्यंग्य के अर्थ को संप्रेषित करने के लिए उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, व्याजस्तुति, श्लेष, यमक, मानवीकरण और वक्रोक्ति आदि विविध अलंकारो का उपयोग किया है। उन्होंने मुहावरों और कहावतों का नया निर्माण किया है। लघुतम टुकडे और मुखडो का

प्रयोग व्यंग्य साहित्य को नई देन है। टुकडे.और मुखडे.के रूप में व्यंग्य उनकी मौलिक प्रस्तुति है। व्यंग्य की भाषा शैली को तेजतर्रार बनाने के लिए उन्होंने पशुपक्षी तथा अचेतन जगत की वस्तूओं को मानवीकृत रूप में प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक तथा पौराणिक पात्रों का या घटनाओं के संदर्भ व्दारा व्यंग्य का सौंदर्य बढाया है। जिसे इस अध्याय में प्रस्तुत किया है।

अष्टम अध्याय –

"उपसंहार"

प्रस्तुत शोध प्रबंध का अंतिम अध्याय उपसंहार है। इस अध्याय में समग्र संशोधन का निचोड प्रस्तुत किया गया है।

समन्वित मुल्यांकन एवं निष्कर्ष:

विभिन्न बाहय एवं आंतरिक अनुभूतियों, मान्यताओं तथा संवेदनाओं के मिलन से निर्मित मनुष्य का व्यक्तित्व विश्लेषण के लिए एक गहन समस्या बन जता है। जड़ वस्तुओं का विलेषण जहॉं विज्ञान का एक सर्वाधिक प्रिय विषय रहा है। सामान्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसकी चरित्रगत विशेषताओं के साथ एक साहित्यकार साहित्य में अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है।

ऐसी स्थिति में जब इस साहित्यकार के व्यक्तित्व को विश्लेशीत करने का निश्चय अथवा प्रयास करते हैं, तो स्थिति बहुत ही गंभीर हो जती है, क्योंकि उसके व्यक्तित्व में न जने कितने पात्रों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्यक्तित्व जुड़ा होता है। ऐसे में यदयपि हम अंशत: ही ठीक हो सकता है। उसका अपना व्यक्तित्व उसकी रचनाओं के माध्यम से देखा ज सकता है जे भाषा और शैली के

माध्यम से विभिन्न स्थितियों तथा स्थितियों के अनुरूप व्यवहार के माध्यम से स्पष्ट होता रहता है। इसी तरह पुणतांबेकर का व्यक्तित्व भी इसी मत की पुष्टि करता है।

शंकर पुणतांबेकर जी का जन्म २१ मई १९२५ को मध्यप्रदेश के गुणा जिले में कुंभराज नामक गॉव में एक अत्यंत गरीब ब्राम्हण परिवार में हुआ। इनका जेवन अनेक मुश्किलों से ही घिरा रहा। व्यक्तिगत जीवन की तरह साहित्यिक जीवन में भी इन्हें नित्य संघर्ष करना पडा है। अपने इसी संघर्षरत जीवन के कारण ही वे समाज से जुडे रहे और समाज के गिरते स्तर में बदलाव लाने के लिए व्यंग्य साहित्य सृजन करते है। शंकर पुणतांबेकर जी ने सरिता मई १९७५ में प्रकाशित रचना 'तमाचा' से हिंदी साहित्य में प्रवेश किया। पुणतांबेकर जी ने अपने व्यंग्य लेखन व्दारा सामाजिक, राजनीतिक, क्षेत्र की विसंगति यों पर कडे प्रहार किये है। अनैतिक आचरणों की कलई उतारने के लिए ही उन्होंने व्यंग्य लेखन किया है। वे व्यंग्य के कुशल खिलाडी है। उनकी कलम चिंतन की अपेक्षा वर्तमान समाज को गंभीर दृष्टि से चिंता के लिए प्रवृत्त करती है।

समाज के यथार्थ से जूडे हुए प्रतिभासंप्पन लेखक शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व विविध मुखी है। उन्होने उपन्यास, नाटक, कथाएँ, निबंध तथा आलोचना आदि साहित्य की विद्याओं में लेखन किया है। उनकी रचना का मूल विषय समाज ही रहा है। पुणतांबेकर जी एक प्रबुध्द प्राध्यापक, समीक्षक साहित्यकार और सबसे बढकर निराले व्यक्तित्व के स्वामी रहे हैं। इनके समग्र साहित्य में आम आदमी की बेबसी, अनुभव कडवाहट, जीवन के प्रति लगाव इन्सान व्दारा इन्सानियत को

चुनौती, मनुष्य की स्वार्थलोलुपता, आर्थिक शोषण आदि जीवन के कटु मधूर, विविध अनुभवों का बखूबी निरूपण हुआ है।

उपलब्धियाँ :

1- पुणतांबेकर जी का रचना फलक काफी बडा है। उन्होंने वर्तमान समाज के गंभीर एवं ज्वलंत प्रश्नों पर व्यंग्य कलम चलाकर सामान्यजन की आवाज बनने का प्रयत्न किया है।

2- पुणतांबेकर जी ने राजनीति में फैली धनलिप्सा, अवसरवादिता, सत्ता की हवस, स्वार्थी प्रवृत्ति, सत्ता के लिए गठजेड, चूनावी हथकंडे जैसे अराजक तत्वों को कुरेदा है। इसी संदर्भ में उन्होंने एक और नेताओं की भर्त्सना की है तो दूसरी और सामान्य जन के प्रति सहानुभूति भी दर्शायी है।

3- प्रशासन में भ्रष्ट अफसरशाही, भाईभतिजवाद, गैरजिम्मेदाराना कार्य, कामों में विलंब, अर्कमण्यता, सिफारिश, रिश्वतखोरी आदि मुधों को लक्ष्य करके प्रशासन की कमजेरी एवं बुराईयों की खबर ली है।

4- स्वाधीनता के बाद औदयोगीकरण के परिणाम स्वरूप बढती महॅंगाई, बेरोजगारी, अमीरी–गरीबी की दरारे, अभिजत्य वर्ग की मानसिकता, कुत्ता संस्कृति, डिनर संस्कृति आदि पर भी पुणतांबेकर जी ने कडे व्यंग्य प्रहार किये है।

5- पुणतांबेकर जी ने समाज के हर पक्ष पर तथा व्यक्ति के विविध गुण–दोषों पर व्यंग्य की कलम चलाई है। व्यक्ति की आचरण भ्रष्टता, सामाजिक पतनशीलता, आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरन से भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का ऱ्हास आदि पर कुठराघात किया है।

6- पुणतांबेकर जी ने प्रसिध्दी से दूर रहकर ईमानदारी से निर्भिकतापूर्ण बाते कही जिसमें प्रखर राष्ट्राभिमान भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, अन्याय के प्रति विद्रोह, शोषित दबे कुचले आम आदमी को न्याय दिलाने की तपड उनके साहित्य में देखी ज सकती है।

7- पुणतांबेकर जी के विश्लेषण में तटस्थ द्रष्ट का भाव न होकर गहन व्यथाबोध की छटपटाहट है जिससें सहृदय पाठक का तादात्म्य हो जता है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :–

प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन करते समय इस विषय से संबंधित अधिक जनकरी सामने आई। विषय की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य में कुछ समस्याएँ रही है। अध्ययन के दौरान ऐसे कई विषय उभरकर सामने आए है। जिन पर स्वतं रूप से अनुसंधान किया ज सकता है।

पुणतांबेकर जी के साहित्य को लेकर भविष्य में अनुसंधान कर्ता अनुसंधान कर सकते है।

1- पुणतांबेकर जी का उपन्यास 'एक मंत्री स्वर्ग लोक में' कथ्य का विलेषणात्मक अध्ययन

2- पुणतांबेकर जी के 'तीन व्यंग नाटक' के कथ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

3- पुणतांबेकर जी के साहित्य में आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक क्षेत्र पर व्यंग्य

4- मराठी व्यंग्य के साथ पुणतांबेकर जी के व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

5- उर्दु व्यंग्य के साथ पुणतांबेकर जी के व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

6- पुणतांबेकर जी के व्यंग्य और व्यंगोत्तर साहित्य का अध्ययन

7-हिंदी साहित्य में पुणतांबेकर जी के का योगदान

परिशिष्ट –१

आधार ग्रंथ :–

शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्य साहित्य

1-‘अंगूर खटटे् नही है, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, ज्यपूर, प्रथम संस्करण १९८५.

2-‘आखरमार’, विकास प्रकाशन, कानपूर, प्रथम संस्करण

3-‘एक मंत्री स्वर्ग लोक में’, साहित्य रत्नालय, ३७/५०, गिलिस बाजर, कानपूर,प्रथम संस्करण १९९७

4- ‘कैक्टस के कॉटे’, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपूर, प्रथम संस्करण १९७९

5- ‘कट आउट’ राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–१७, जातपुरी, दिल्ली, प्रथम संस्करण २००४

6- गुलेल भाग १, पुस्तकायन, २/४२४० ए अन्सारी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९३

7- गुलेल भाग २, पुस्तकायन, २/४२४० ए अन्सारी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९३

8- गुलेल भाग ३, पुस्तकायन, २/४२४० ए अन्सारी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९४

9- गुलेल भाग ४, पुस्तकायन, २/४२४० ए अन्सारी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९४

10- गुलेल भाग ५, प्रथम संस्करण १९९६

11- ‘गिध्द मॅडरा रहा है’, राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–१७, जापुरी दिल्ली, प्रथम संस्करण २०००

12- ‘जंगल में राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–१७, जापुरी दिल्ली, प्रथम संस्करण २००४

13- ‘तेरहवा डिनर’, राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–१७, जापुरी दिल्ली, प्रथम संस्करण २००२

14- ‘तीन व्यंग्य नाटक’, पंचशील प्रकाशन, जी–१७, जातपुरी, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९७

15-'दुर्घटना से दुर्घटना तक' राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–१७, जातपुरी दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९७

16-'पतनज्ली', विकास प्रकाशन, ३११ सेक्टर जे–१७, जातपुरी दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९७

17-'पराजय की जुबली', राधाकृष्ण प्रकाशन, जे–१७, जातपुरी दिल्ली, प्रथम संस्करण २००४

18-'प्रेम विवाह', पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपूर, प्रथम संस्करण १९८१

19-'फर्जे से पैदा भयो', पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपूर, प्रथम संस्करण २००६

20-'बचाओं मुझे कवियों से बचाओं,' आराधना ब्रदर्स कानपूर प्रथम संस्करण १९८०

21-'बचाओ मुझे डॉक्टरों से बचाओं,' पुस्तक संस्थान, १०९/५० नेहरूनगर कानपूर प्रथम संस्करण १९७२

22-'बाअदब बेमुलाहज', पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपूर, प्रथम संस्करण २००२

23-'मेरी फॉसी' राधाकृष्ण प्रकाशन, जे–१७, जातपुरी, दिल्ली, प्रथम संस्करण २०००

24-'रेडीमेट कपडे' हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली ६, प्रथम संस्करण १९७३

25-'विजिट यमराज की', पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपूर, प्रथम संस्करण १९८३

26-'व्यंग्य अमरकोश', पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपूर, प्रथम संस्करण १९९४

27-'शतरंग के खिलाडी', राधाकृष्ण प्रकाशन, जे–१७, जातपुरी, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९७

परिशिष्ट –२

संदर्भ ग्रंथ :–

1-मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाए – हरिशंकर परसाई, ज्ञानभारती, दिल्ली चतुर्थ संस्करण १९८७

2-राजस्थान के हास्य व्यंग्यकार – डॉ. मदन केवलीया, राजस्थान साहित्य आकादमी, उदयपूर, प्रथम संस्करण १९८३

3-व्यंग्य चिंतना और शंकर पुणतांबेकर – डॉ. बालेंदू शेखर तिवारी, डॉ. तेजपाल चौधरी, डॉ. माहेश्वरी, नीरज बुक सेंन्टर, आर्य नगर सोसायटी, दिल्ली प्रथम संस्करण २००२

4-व्यंग्य का सौंदर्य शास्त्र – डॉ. मलय, साहित्यवाणी, इलाहाबाद प्रथम संस्करण १९८३

5- व्यंग्य के मुलभूत प्रश्न – डॉ. शेरजंग गर्ग, साहित्यीक प्रकाशन, दरीयागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण १९७९
6- व्यंग्य क्या–व्यंग्य क्यों – डॉ. शामसुंदर घोष प्रभात प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण १९८३
7- शैलीकार शंकर पुणतांबेकर – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, शैलज प्रकाशन, ५७ पी कुंजविहार, यशोदानगर, कानपूर, प्रथम संस्करण २०१०
8- मेरी श्रेष्ठ व्यंगरचनाएँ – लतिफ घोंघी ज्ञानभारती दिल्ली प्रथम संस्करण १९८७
9- श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कविताएँ – काका हाथरसि एवं गिरिराज शरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण १९७८
10- सदाचार का ताबीज – हरिशंकर परसाई, भारतीय ज्ञानपीठ, कैनोट प्लेस नई दिल्ली, तृतीय संस्करण १९७५
11- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य – डॉ. शेरजंग गर्ग साहित्य भारतीय प्रकाशन, कृष्णनगर दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७३
12- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य का मूल्यांकन – डॉ. सुरेश माहेश्वरी विकास प्रकाशन ११७/१४५, साकेतनगर, कानपूर, प्रथम संस्करण १९९४
13- हिंदी व्यंग्य परंपरा में शंकर पुणतांबेकर का योगदान – अनुपमा प्रभुणे, अन्नपुर्णा प्रकाशन, साकेतनगर, कानपूर, प्रथम संस्करण २०१०
14- हिंदी साहित्य में हास्य और व्यंग्य – संपा. प्रेमनारायण टंडन, हिंदी साहित्य भांडार, लखनौ प्रथम संस्करण १९६७

15- हिंदी का स्वातंयोत्तर हास्य और व्यंग्य – डॉ. बालेंदू शेखर तिवारी, अन्नपूर्णा प्रकाशन १२७/११०० साकेत नगर कानपूर प्रथम संस्करण १९७८

हिंदी कोश :–

1- नालंदा विशाल शब्द सागर, संपादक नवल जी, आदर्श बुक डिपो, करोलबाग, नईदिल्ली, ५ संस्करण २०००

2- मानक हिंदी कोश, सपादक रामचंद्र बर्मा, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग प्रथम संस्करण १९६४

3- संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर – संपादक रामचंद्र वर्मा नागरी प्रचारिणी सभा काशी कोश संस्थान सप्तम संस्करण १९७१

4- हिंदी साहित्य कोश – संपादक धीरेंद्र वर्मा तथा अन्य ज्ञानमंडल लिमिटेड, संत कबीर मार्ग वाराणसी व्दितीय संस्करण बसतपंचमी २०२०

पत्रिकाऍं :–

1- अक्षरा – मई, जुन २००५

2- प्रकर – दिसंबर ८६, जनवरी ९५

3- समग्र दृष्टि – संपादक केशव प्रथमवीर, अंक १०जुलाई २००६

शोध छात्र　　　　　　　　शोध निर्देशक

किरण गोपाल शिंदे

डॉ. हाशमबेग मिर्झा
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, नलदुर्ग,
ता. तुलजपूर जि उस्मानाबाद